Academic Journal of Excellence | Bi-Annual Peer Reviewed Journal

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतरत्न बाबासाहब डॉ. भीमराव आंबेडकर

प्रो.मनोज चतुर्वेदी[1]

[1] 'लेखक पंडित दीनदयाल उपाध्याय पीठ हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के पूर्व अध्यक्ष एवं 'धर्मसम्राट स्वामी करपात्रीजी समग्र' के संपादक

सारांश

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सोच में हिंदू समाज को बांटकर सुधारने की प्रक्रिया नहीं है। उसकी सोच में समग्रता है क्योंकि जब हम समाज को खंड–खंड में बांटते हैं, तो वह स्वयं में विभाजित हो जाता है। उसके अंदर विकृतियां आ जाती है। भारतरत्न बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव रामजी आंबेडकर लेखक, पत्रकार, वकील, राजनेता, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कानून मंत्री तथा आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े समाज के उद्धारक थे। वह स्वयं के साथ एवं दलितों के साथ होने वाले अमानवीय व्यवहारों से व्यथित थे जिसके कारण उन्होंने पत्रकारिता, लेखन एवं वंचित समाज के उद्धार हेतु अनथक कार्य किया। डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर को मात्र दलितों का नेता मानना संगत नहीं होगा। अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की तरह ही सामाजिक समरसता तथा विकास का समर्थक रहा है।

शब्द –संकेत : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, बाबासाहब डॉ.भीमराव आंबेडकर, सनातन धर्म, सामाजिक न्याय, सामाजिक समरसता, सेवा कार्य, राष्ट्रीय एकता।

परिचय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है जिसकी स्थापना डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने विजयदशमी 1925 को महाल नागपुर में किया। ''डॉक्टर हेडगेवार ने अपने घर में 15–20 लोगों को इकट्ठा करके कहा कि हम लोग आज से संघ शुरू कर रहे हैं। इस बैठक में श्री भाऊजी कॉवरे, श्री अण्णा सोहोनी, श्री विश्वनाथ राव केलकर, श्री बालाजी हुद्दार तथा श्री बापूराव भेदी आदि सज्जन उपस्थित थे।''[1] डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जन्मजात देशभक्त थे। इसका स्पष्ट प्रमाण यह दिखता है की 22 जून, 1897 को महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के 60 वर्ष पूरा होने पर समूचे देश के गांव–गांव में उत्सव मनाए गए। गांव तथा शहर झंडा, पताका, वाद्ययंत्रों से भरे पड़े थे। बच्चें मिठाइयां खाकर झूम रहे थे, लेकिन बालक केशव ने उन मिठाइयों को फेंक दिया। डॉक्टर केशव ने अपने भाई से कहा ''परंतु अपने भोंसलों के राज्य को जीतने वाले राजा के राज्य का आनंद कैसा?''[2]

नागपुर के सीताबर्डी किले पर ब्रिटिश सरकार का ध्वज लहराता रहता था। यह देखकर बालक केशव का मन आक्रोश से भर जाता था की क्या कारण है कि पश्चिमी भूमि से आकर अंग्रेज मेरी भोली–भाली जनता पर प्रशासन कर रहे हैं तथा इस स्थान पर भगवा झंडा लगा दिया जाए, तो ठीक रहेगा। ''दूसरे ही दिन बझे गुरुजी के घर पढ़ने के कमरे में कुदाली–फावड़े लेकर इस बाल मंडली ने उत्खनन प्रारंभ कर दिया। बझे गुरुजी को आशंका हुई। जब वह अंदर गए, तो क्या देखते हैं कि एक ओर गड्ढा खुदा हुआ है और दूसरी ओर उसकी

मिट्टी का ढेर लगा हुआ है।''[3]

परम देशभक्त डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार नागपुर से कोलकाता डॉक्टरी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए आए तथा यहां की सामाजिक गतिविधियों में भी धीरे–धीरे शामिल होने लगे। वहां पंजाबी व्यक्ति निरंजन सिंह और एवं बंगालियों में विवाद हुआ लेकिन जन्मजात देशभक्त डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने मध्यस्थता करके विवाद को सुलझा दिया। अनुशीलन समिति के प्रमुख पुलिन बाबू स्नातक थे। वहां पर एक दिन अचानक 100 मुसलमानों ने हमला बोल दिया। लेकिन अनुशीलन समिति ने डटकर मुकाबला किया। ''1911 से 1913 के प्रारंभ तक ही डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार का पुलिन बाबू से थोड़ा बहुत संबंध रहा होगा, पर उन दोनों पर सरकार की कड़ी एवं टेढ़ी नजर थी।''[4]

भारत में 1923–24 में महात्मा गांधी ने खिलाफत आंदोलन के असफल होने के बाद यरवदा जेल में कारावास से मुक्त होकर अस्पृश्यता आंदोलन प्रारंभ किया। अछूत समाज के सम्मान के लिए 9 मार्च, 1924 को बाबासाहब डॉ. भीमरावजी आंबेडकर ने परेल मुंबई में अस्पृश्य समाज के पुराने कार्यकर्ताओं को लेकर 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का गठन किया। 12 वर्षों के कारावास के बाद और अराजनीतिक कार्यों के शर्त पर स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर ने अस्पृश्यता की समाप्ति तथा घर वापसी पर ध्यान देना शुरू किया। लेकिन एक चौथा युग प्रवर्तक था जिसने संपूर्ण हिंदू समाज का संगठन प्रारंभ किया। इसके मूल में भारतीयता एवं राष्ट्रीयता की भावना थी। ''सारा हिंदू समाज मेरा है। हिंदू समाज से मेरा भावनात्मक नाता है। यह विचार तो विविध संस्कारों द्वारा मन पर अंकित होते जाते हैं, परंतु हिंदू संगठन एवं जाति भेद, हिंदू संगठन एवं अस्पृश्यता, हिंदू संगठन एवं रूढ़िवाद, हिंदू संगठन और धर्म तत्व ज्ञान आदि विषयों की पहचान तथा उसके बारे में हेडगेवार का दृष्टिकोण इसकी जानकारी तो स्वयं ही प्राप्त करनी होती है।''[5]

1964 में पवई मुंबई के सांदीपनि आश्रम में विश्व हिंदू परिषद की स्थापना हुई। इस अवसर पर मास्टर तारा सिंह, राष्ट्रसंत श्री तुकड़ो जी महाराज, स्वामी चिन्मयानंद आदि सनातन धर्म के समस्त धर्माचार्य उपस्थित थे। 1966 में कुंभ के अवसर पर प्रयागराज में विश्व हिंदू परिषद का पहला सम्मेलन संपन्न हुआ। इस अवसर पर हिंदू धर्म के समस्त धर्माचार्यों को एक मंच पर लाया गया तथा मंच से **न हिंदूः पततो भवेत** का उद्घोष किया गया, जिसके केंद्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी थे। 3 अक्टूबर, 1993 को राम जन्मभूमि न्यास की बैठक में आए संत, महंत, नेता एवं संघ के वरिष्ठ प्रचारक सूर्य नारायण राव, अशोक सिंघल दीक्षाभूमि गए। स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती ने बाबा साहब डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्पाहार भेंट किया तथा यह घोषणा किया कि ''डॉक्टर बाबासाहब के देश में अस्पृश्यता का कोई नामोनिशान निशान नहीं होगा। हम सब रामभक्त आज यहां डॉक्टर भीमराव आंबेडकर जी की दीक्षा स्थान पर एकत्र हुए हैं। इस दीक्षा स्थल से हम सब रामभक्त भीम प्रेरणा और भीमशक्ति साथ लेकर जाएंगे और संपूर्ण समाज का उद्बोधन करेंगे।''[6]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक बाला साहब देवरस ने जो विचार व्यक्त किया। वह तो संपूर्ण हिंदू समाज में एकता,

समाजिक समरसता और बाबा साहब डॉक्टर भीमराव रामजी आंबेडकर के प्रति अनन्य आस्था एवं श्रद्धा का स्पष्ट संकेत था। ''संघ संस्थापक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार का अस्पृश्योद्धारक डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के प्रति आत्मीयता रखकर नागपुर में देशभर से एकत्र हुए साधु–संत तथा धर्माचार्यों ने एकता का एक महान आदर्श प्रस्तुत किया है। संतों का दीक्षाभूमि पर जाकर डॉक्टर आंबेडकर को अभिवादन करने की घटना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक रूप से दूरगामी परिणाम करने वाली है। डॉक्टर आंबेडकर तथा डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार दोनों नेता एक ही उद्देश्य से प्रेरित थे। उनसे प्रेरणा लेकर सब हिंदुओं को छुआछूत को त्याग कर एकता के साथ रहना चाहिए। यह आदर्श संतों ने इस घटना द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया है।''[7]

भारतरत्न बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव रामजी आंबेडकर (14 अप्रैल, 1891– 6 दिसंबर, 1956) लेखक, पत्रकार ,वकील ,राजनेता, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कानून मंत्री तथा आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े समाज के उद्धारक थे ।वह स्वयं के साथ एवं दलितों के साथ होने वाले अमानवीय व्यवहारों से व्यथित थे जिसके कारण उन्होंने पत्रकारिता, लेखन एवं वंचित समाज के उद्धार हेतु अनथक कार्य किया। डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर को मात्र दलितों का नेता मानना संगत नहीं होगा। आंबेडकर को सवर्ण समाज का सहयोग एवं स्नेह निरंतर मिलता रहा था। ज्ञातव्य है कि उनके नाम से आंबेडकर जुड़ा उपनाम भीमराव से अधिक स्नेह रखने वाले ब्राह्मण गुरु महादेव आंबेडकर का दिया हुआ है।''[8] 1936 के चुनावों में 15 में से 13 स्थानों पर जीत पार्टी को मिलने के साथ दो सामान्य स्थान पर जीत स्वर्ण समाज में उनकी लोकप्रियता को दर्शाता है। शारदा कबीर एक सारस्वत ब्राह्मण कन्या थी। जो बाद में उनकी दूसरी पत्नी सविता आंबेडकर बनीं। **मनुस्मृति** को पहली बार जलाने वाला जी .एन.सहत्रबुद्धे भी जन्मना ब्राह्मण था।

देश का सबसे बड़ा गैर सरकारी सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने शुरू से ही बाबासाहब डॉक्टर भीमराव आंबेडकर को सदैव सम्मान दिया है तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने प्रातः स्मरण में भी उन्हें स्थान दिया है। संघ का एकात्मता स्तोत्र भारत की सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है जिसमें प्रकृति, नदियां, पवित्र स्थान ,महान विभूतियां तथा धार्मिक ग्रंथ शामिल है। इसके श्लोक संख्या 30 में देश के गणमान्य व्यक्तियों के साथ भीमराव आंबेडकर का भी नाम लिया जाता है।

''सुभाषः प्रणवानंदः क्रांतिवीरो विनायकः।

ठक्करो भीमरावश्च फुले नारायणो गुरुः।।''[9]

अर्थात् नेताजी सुभाष चंद्र बोस, स्वामी प्रणवानंद, स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर, ठक्कर बापा, भारतरत्न डॉक्टर भीमराव आंबेडकर, महात्मा फुले, संत नारायण गुरु। भारतभूमि पर जितने भी ज्ञात–अज्ञात संत महापुरुष हुए हैं जिन्होंने पवित्र मातृभूमि की श्रद्धावनत होकर सेवा किया है। उन सभी को प्रातः स्मरण में प्रणाम निवेदित किया जाता है।

स्वामी विवेकानंद ने महात्मा बुद्ध एवं श्रीमद् शंकराचार्य के चिंतन को समन्वित करके संपूर्ण मानव जाति के उत्थान का कार्य किया जिससे भारत में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल हुई। भारतीयों ने यह अनुभव किया कि हिंदू जाति कायर, अज्ञानी एवं

संकीर्ण नहीं है। ठीक इसी प्रकार बाबा साहब ने दलित समाज के उत्थान के लिए कार्य किया। ''कहना चाहिए की बौद्ध मत को स्वीकार कर तथा पुरस्कार कर इस मार्गदर्शन का महत्वपूर्ण हिस्सा करने के कार्य को डॉक्टर आंबेडकर द्वारा तेज गति दी गई है।''[10]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी से डॉक्टर आंबेडकर पर एकाग्र **'गौरव'** में बाबा साहब डॉक्टर आंबेडकर की 73 वीं जयंती के अवसर पर लेख लिखने हेतु निवेदन किया गया था। श्रीगुरुजी ने अत्यंत आत्मीयतापूर्वक उसे स्वीकार किया। ''आपकी इच्छा है कि मैं कुछ लिखूं। आपने मेरा अत्यंत सम्मान किया है। इस सम्मान के लिए मैं पात्र नहीं हूं, क्योंकि लेख लिखने का मुझे अभ्यास नहीं है तथापि वंदनीय डॉक्टर आंबेडकर की पवित्र स्मृति को अभिवादन करना मेरा स्वाभाविक कर्तव्य है।''[11]

भारतरत्न बाबासाहब डॉ. भीमराव आंबेडकर ने बड़ौदा तथा कोल्हापुर महाराज से प्राप्त छात्रवृतियों के आधार पर उच्च शिक्षा प्राप्त किया जिसमें प्रमुख रूप से कला, वाणिज्य, संस्कृत, अर्थशास्त्र, कानून इत्यादि विषय थे। उस समय उपर्युक्त समस्त विषयों की उच्च शिक्षा उच्च वर्गों के विद्यार्थी ही प्राप्त करते थे। बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने दलित समाज में नई चेतना का संचार किया कि उच्च शिक्षा पर अधिकार केवल उच्च वर्गों का नहीं है। इसे सामान्य वर्गों के विद्यार्थी भी प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार डॉक्टर आंबेडकर ने अपनी चाह के आधार पर राह बनाया। ''उनकी विवेचक तथा कुशाग्र बुद्धि को तत्वज्ञान की दृष्टि से बौद्ध मत की त्रुटियां दिखती थी, इसका उन्होंने उल्लेख भी किया है, परंतु व्यवहार की समानता, शुचिता एवं परस्पर संबंध की कारुण्य पूर्ण स्नेहमया इन सारे गुणों से प्राप्त होने वाली मानव सेवा की विशुद्ध प्रेरणा थे। बौद्ध मत की श्रद्धा में से उत्पन्न होने वाले लाभ, राष्ट्र तथा मानवता की उन्नति के लिए अनिवार्य है। यह जानकर हो सकता है कि उन्होंने आग्रह से ऐसे मत का पुरस्कार किया हो।''[12]

श्री गुरुजी की दृष्टि में, यहां यह निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि बाबासाहब डॉ.भीमराव आंबेडकर हिंदू धर्म में व्याप्त कुरीतियों से अत्यधिक दुःखी थे, तो इस्लाम एवं ईसाई मत में व्याप्त हिंसा, छल–बल ,अभारतीय दृष्टि, प्रलोभन द्वारा धर्मांतरण इत्यादि विकृतियों के कारण ही बौद्ध मत को स्वीकार किया था। श्री गुरुजी की दृष्टि में महात्मा बुद्ध ने तथा उनके अनुयायियों ने उस समय के समाज में व्याप्त कुरीतियों का बहिष्कार करने तथा विश्व कल्याण की मानवीय दृष्टि को आत्मसात करने पर बोल दिया है। इसका मतलब नवीन मत एवं पंथ की स्थापना नहीं था। लेकिन खंडन एवं मंडन की इस प्रक्रिया ने नवीन पथ का श्रीगणेश किया। इसके कारण समाज में नवीन चेतना का संचार हुआ। ''डॉक्टर बाबा साहब आंबेडकर जी ने समाज की भलाई के लिए, धर्म के हित के लिए, चिरंजीवी समाज के निर्दोष तथा सुदृढ़ होने के लिए कार्य किया। उनका यह कार्य समाज से पृथक होकर भिन्न पंथ निर्माण करने के लिए नहीं है। ऐसी मेरी श्रद्धा है। इसलिए भगवान बुद्ध के इस युग के उत्तराधिकारी के नाते उनके पवित्र स्मृति का मैं अंतःकरणपूर्वक अभिवादन करता हूं।''[13]

हिंदू समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था तथा अन्य भेदभाव को विकृत रूप से प्रस्तुत किया गया।

''अंग्रेजों ने ब्राह्मण एवं धर्म के प्रति अश्रद्धा निर्माण करने की तरह–तरह से चाल चली। चूंकि, उनका शासन था। उन्होंने पाठ्य–पुस्तकों में परिवर्तन किया तथा सामाजिक समरसता पर आघात किया।''[14]

यदि हमारे यहां बनवासी बांधवों में धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा नहीं होती, तो आज नाम लेने के लिए भी कोई बंधु नहीं बचता। सब ईसाई हो गए होते। श्री गुरुजी ने एक बार एक ईसाई से पूछा, की स्वतंत्र भारत में तुम शिक्षा, चिकित्सा, जादू टोना के नाम पर ईसाई बना सकते हो, तो उसने कहा इसाई बनाने में हम सफल नहीं होंगे, तो उसे अराष्ट्रीय अवश्य बना देंगे। आज भी ईसाई मिशनरियों द्वारा इसी प्रकार आर्थिक रूप से विपन्न वनवासियों के धर्मांतरण किये जा रहे हैं। भोले वाले वनवासियों, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों के साथ भेदभाव को बढ़ा–चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है तथा उनका भय एवं प्रलोभनन से धर्मांतरण किया जाता है। श्री गुरुजी ने दुर्बल समाज में शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया है। हमें अपने समाज की प्रगति के लिए इस दुर्बल वर्ग को शक्ति संपन्न बनाना होगा। उनकी अवहेलना करने से काम नहीं चलेगा। उन्हें शिक्षित कर समाज के अन्य वर्गों के साथ खड़ा करके बनाने हेतु हमें अपना कर्तव्य पूरा करने में तत्पर रहना चाहिए।''[15]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सोच में हिंदू समाज को बांटकर सुधारने की प्रक्रिया नहीं है। उसकी सोच में समग्रता है क्योंकि जब हम समाज को खंड–खंड में बांटते हैं, तो वह स्वयं में विभाजित हो जाता है। उसके अंदर विकृतियां आ जाती है। महात्मा गांधी ने समाज में उपेक्षित तथा आर्थिक रूप से दुर्बल समाज के लिए 'हरिजन' शब्द का प्रयोग किया। लेकिन धीरे–धीरे समाज बंटने लगा। ''आप प्रयोग जरूर कीजिए। परंतु हमें इतना आश्वासन दीजिए कि इस प्रयोग से हमारा समाज खंड –विखंड होकर विनाश के मार्ग पर न जाए। कम्युनल अवार्ड और अलग चुनाव यानी पृथक मतदान के विरुद्ध आमरण अनशन भी किया ।परंतु उनके अंतःकरण की इतनी विशुद्ध ,भव्य और उदात्त भावना होते हुए भी जो भय उत्पन्न हुआ था कि पृथक नाम से पृथकता बढ़ जाएगी ,दुर्भाग्य से वह सच साबित हुआ।''[16]

बाबासाहब भारतीय समाज में व्याप्त अस्पृश्यता से अत्यधिक व्यथित थे। समाज के प्रभु जातियों ने उनके साथ तथा उनके समाज बन्धुओं के साथ अमानवीय व्यवहार किया था जिसके कारण उनके मन में घोर पीड़ा थी। यह पीड़ा बार–बार उनके भाषणों, वक्तव्यों एवं लेखन में दृष्टिगोचर होता है। इसलिए डॉ. आंबेडकर ने पंजाब की **'जाँति–पाँति विरोधी मंडल'** की परिषद में दिए गए अध्यक्षीय भाषण में निम्नलिखित टिप्पणियां की थी, ''हिंदुओं का जीवन केवल आज ही नहीं। हमेशा से लज्जास्पद रहा है, अभी भी हिंदू इसलिए नहीं जी रहे हैं कि उनमें पराक्रम है, बल्कि इसलिए कि दूसरों से पैरों तले रौदे जाने में शर्म नहीं आती। काल के प्रवाह में हम जिए जा रहे हैं, इसका हिंदू राष्ट्र को अभिमान है, पर वह अभिमान खोखला है क्योंकि हिंदू समाज सदा से ही दास्य जीवन जीता रहा है। वह अखंड शरणागति एवं पराभव का जीवन था।''[17]

बाबासाहब डॉ.भीमराव आंबेडकर के उपर्युक्त वक्तव्य से स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर अत्यधिक व्यथित थे, कि एक पढ़ा–लिखा, विद्वान, पत्रकार, संपादक, सामाजिक रूप से पिछड़े समाज का उद्धारक किस प्रकार का वक्तव्य देता है जबकि

वह व्यक्ति स्वयं ही यह स्वीकार कर चुका है कि भारत ने आक्रांताओं के आक्रमण का प्रतिकार किया था। हम उस हिंदू भूमि, हिंदू वंश तथा हिंदू जाति में पैदा हुए हैं ।यदि हमारे पूर्वजों में कोई कमियां है, तो उसका सुधार करना, परिष्कार करना तथा आंदोलन करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। जिस प्रकार लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा था कि ''**स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।**' ठीक उसी प्रकार समाज सुधार भी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।हमारे पूर्वजों, पितृधर्म, मातृ धर्म को धिक्कार करना तथा दूसरे के माता–पिता एवं धर्म को अपना कहना हमारा अधिकार नहीं है। बाप को बाप न कहने वाला पुत्र अपने पूर्वजों से भी नामर्द है। क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए आंदोलन ही एकमात्र मार्ग है और वह मार्ग अहिंसा, सत्याग्रह, अनशन उपवास है। ''अगर मुझे इस बात की शर्म है कि मेरे वंश में किसी ने पराक्रम नहीं किया, तो मुझे चाहिए कि अपने वंश का मैं ही प्रथम पराक्रमी बनूं और अपने कुल शत्रुओं से अपना अनाम वंश का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखाऊ। जो यह कहकर हंसते हैं कि मेरे पूर्वजों ने कोई पराक्रम नहीं किया। उनके दांत मुझे खट्टे करने चाहिए।''[18]

स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर ने **वैदिक एवं पौराणिक कालखंड, ग्रीकों का आक्रमण तथा हिंदुओं द्वारा उनका पराभव, मिनांदर से युद्ध, युचि से महायुद्ध, जागतिक और सांस्कृतिक साम्राज्य, अटक पर हिंदू विजय, मुसलमानों का उदय अस्त और विनाश इत्यादि अध्यायों** में हिंदू वीरता का बखान किया है। ''वैदिक काल के इस सप्त सिंधु राष्ट्र के वीरों के खड्ग और द्रष्टा ऋषियों की स्फूर्ति प्रज्वलित यज्ञ की ज्वालाओं की तरह दैदिप्यमान एवं प्रबल थी। समकालीन शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते उनके सैन्य, राज्य एवं संस्कृति, सरस्वती से ब्रह्मावर्त और ब्रह्मावर्त से मगध, प्रयाग, काशी मथुरा, द्वारका इस तरह पूर्व समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक अप्रतिहत रूप से विस्तार पाती रही। विंध्य एवं सह्य पर्वत पार कर वह दक्षिण समुद्र तक फैली। हिंदुओं ने घने अरण्यों को काटकर प्रदेश के प्रदेश बसाई। बीच राह आए विभिन्न जनपदों और विपक्षी संस्कृतियों में से कुछ को उन्होंने अपने में समा लिया, कुछ को पचा लिया और कुछ को धूल में मिलाया।''[19]

भगवा ध्वज राष्ट्र का ध्वज है। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भी ध्वज है। हिंदू महासभा के कुछ नेता बाबा साहब से मिले तथा निवेदन किया की भगवाध्वज को राष्ट्रध्वज की मान्यता मिले। इसके लिए झंडा समिति में मैं अपना विषय रखूंगा। वह अन्य जिम्मेदार लोगों को भी आंदोलन द्वारा पर्याप्त दबाव बनाना चाहिए ।10 जुलाई, 1937 को हवाई जहाज में जाते समय बहुत से नागरिक तथा हिंदू नेता उनका विदाई देने गए। उस समय उन्होंने डॉक्टर अंबेडकर जी को हवाई जहाज में अपना स्थान ग्रहण करते समय एक भगवाध्वज सम्मान सहित भेंट भी किया। डॉ. आंबेडकर ने वचन दिया कि यदि इस ध्वज के लिए आंदोलन होगा, तो मैं निश्चय ही अपना समर्थन दूंगा। उन्होंने कहा ''क्या आपने किसी मेहतर के लड़के द्वारा संविधान सभा के ऊपर यह गेरुआ (भगवाध्वज) फहराने की कल्पना की है। आगे चलकर संविधान सभा ने 22 जुलाई, 1937 को चक्र सहित तिरंगे ध्वज को राष्ट्रध्वज के रूप में स्वीकार कर लिया।''[20]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राष्ट्र के प्रति, मातृभूमि के प्रति, भारतीयता की प्रति, वेदों के प्रति अनन्य निष्ठा एवं श्रद्धा है। एकात्म मानववाद के

प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शब्दों में षहिंदू शब्द किसी सांप्रदायिकता का नहीं, बल्कि राष्ट्रवाद का द्योतक है। धर्मनिरपेक्षता हिंदुओं का दिया हुआ उपहार है और हिंदुत्व ही भारतीय राष्ट्रवाद की नींव है।''[21]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय हिंदू शब्द को राजनीति का प्रतीक नहीं मानते हैं। भगवाध्वज को राष्ट्र का ध्वज ही नहीं, अपितु समन्वय का प्रतीक भी मानते हैं। भारत को एक देश के रूप में देखते हैं। वह तो एक विशेष धर्म का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए जब हम भारतीय कहते हैं, तो यह शब्द राजनीतिक संबंधों का प्रदर्शन नहीं करता है ।हम कम्युनिस्टों की तरह घृणा और संघर्ष को जीवन का आधार बनाकर नहीं चलते हैं ,अपितु हम एकता एवं समन्वय को जीवन का आधार समझते हैं।[22]

भारतरत्न बाबासाहब डॉक्टर भीमराव आंबेडकर के चिंतन में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल थी। वह भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखते थे तथा भारतीय धर्मों जैसे सनातन धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा सिख धर्म को राष्ट्रीयता का पोषक मानते थे। इसलिए महात्मा बुद्ध के द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म में अपनी आस्था प्रकट किया। ''आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि लोगों में संयुक्त राष्ट्रीयता का आभास उत्पन्न किया जाए। उनमें यह भावना नहीं है कि वे सर्वप्रथम भारतीय और बाद में हिंदू, मुसलमान, सिंधी एवं कर्नाटकी हैं, बल्कि यह भावना कि वे प्रथमतः और अंततः भारतीय है, उत्पन्न की जाए।''[23]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक, भारतीय जनसंघ के पूर्व संगठन मंत्री तथा बाद में राष्ट्रीय अध्यक्ष बनें। बाबासाहब भी निर्वाचन एवं आरक्षण में दलितों के पक्षधर है तथा दोनों की राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति असंदिग्ध है। बाबा साहब डॉक्टर आंबेडकर ने यह अनुभव किया था कि समाज जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां पर अस्पृश्य समझे जाने वाले व्यक्तियों एवं समुदायों के साथ भेदभाव न किया जाता है। सार्वजनिक सुविधाओं के क्षेत्र में यह भेदभाव अस्पृश्यों को स्कूलों, कुओं और यातायात से वंचित कर देता है। सार्वजनिक प्रशासन अस्पृश्यों के प्रति भेदभाव से सबसे अधिक प्रभावित है, इसने कचहरी यों, सरकारी विभागों, सरकारी बैंकों विशेष कर पुलिस को प्रभावित किया है। [24]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विचार परिवार का एक संगठन **सामाजिक समरसता मंच** है जिसकी एक शाखा **भटके विमुक्त विकास मंच** है। इसके वरिष्ठ कार्यकर्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक तथा ब्राह्मण है। इन्होंने महाराष्ट्र के पारधी जाति पर आठ सौ (800) पृष्ठों की पुस्तक ही नहीं लिखा है, अपितु समाज सुधार एवं समाज सेवा का आदर्श भी प्रस्तुत किया है। ''इस जाति के व्यक्ति संपर्क एवं बातचीत के लायक नहीं समझे जाते हैं। उनके पास ना जमीन है, ना कोई जातिगत व्यवसाय है, ना किसी का संरक्षण ही प्राप्त है। इनकी जन्म मृत्यु का पंजीकरण भी नहीं होता। उनके पास राशन कार्ड भी नहीं है, लेकिन पारधी बांधवों को मगरसांगवी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने बसाने का एक प्रकल्प खड़ा किया है। कुल 50 परिवार बसाए गए हैं।''[25]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्कारों में पले –बढ़े तथा अपना संपूर्ण समय पारधी जाति के उत्थान में लगाने वाले **गिरीश प्रभुणे** पारधी समाज में व्याप्त अंधविश्वास को दूर करने के लिए नया आंदोलन खड़ा किया है। महाराष्ट्र में शुभ अवसरों

पर सत्यनारायण भगवान की पूजा पति–पत्नी को करनी होती है, लेकिन पारधी प्रथा के अनुसार स्त्री को पूजा का अधिकार नहीं है। वह अंतर बाह्य पापिनी समझी जाती है। उसे धर्म कार्य का कोई अधिकार नहीं। पुरखों की रिवाज एवं प्रथाएं भंग करने पर पाप लगेगा। इस पाप का बोझ कोई अपने सर पर ले और जाति पंचायत को ₹ 5000 जुर्माना अदा करें। तभी बात बनेगी। गिरीश प्रभुणे ने कहा, ''यह पाप मैं अपने सर पर लूंगा और 5000 रूपये का जुर्माना भी दूंगा।''[26]

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बाबासाहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की तरह ही सामाजिक समरसता तथा विकास का समर्थक रहा है। आद्य सरसंचालक से लेकर सामान्य कार्यकर्ताओं में भी वंचित समाज, आर्थिक रूप से विपन्न समाज के प्रति सदभावना थी ,है तथा रहेगी। समाज के बांधवों के साथ मिलकर संघ विचार परिवार के स्वयंसेवक, कार्यकर्ता तथा प्रचारक समाज सेवा कार्य कर रहे हैं । यह राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता का साक्षात प्रमाण है। समाज में एकता एवं समरसता को बढ़ावा देने में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

संदर्भ–सूत्र

1. पालकर, ना. ह., (2024) डॉक्टर हेडगेवार चरित, लखनऊ : लोकहित प्रकाशन संस्कृति भवन राजेंद्र नगर, पृष्ठ– 149
2. वहीं, पृष्ठ –26
3. वहीं, पृष्ठ 26 –27
4. वहीं ,पृष्ठ 55
5. पतंगे ,रमेश ,(2014), डॉक्टर हेडगेवार– एक अनोखा नेतृत्व, दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन झंडेवालान, पृष्ठ 4
6. वहीं, पृष्ठ 70
7. वहीं, पृष्ठ 70–71
8. चतुर्वेदी, विष्णु प्रसाद, समता के शिल्पकार–डॉक्टर भीमराव आंबेडकर,पांडेय, प्रोफेसर संतोष (संपादक), शैक्षणिक मंथन, वर्ष –6, अंक– 9, 1 अप्रैल, 2014, पृष्ठ 12–13
9. एकात्मता स्तोत्र (2000), दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 5 –6
10. श्रीगुरुजी समग्र, (युगाब्द 5106), नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, देशबंधु गुप्ता मार्ग, खंड–1, पृष्ठ–134
11. श्रीगुरुजी समग्र, (युगाब्द 5106), नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, देशबंधु गुप्ता मार्ग, खंड–1, पृष्ठ–134
12. श्रीगुरुजी समग्र, (युगाब्द 5106), नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, देशबंधु गुप्ता मार्ग, खंड–1, पृष्ठ–135
13. श्रीगुरुजी समग्र, (युगाब्द 5106), नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, देशबंधु गुप्ता मार्ग, खंड–1, पृष्ठ–135–136

14. श्रीगुरुजी समग्र, (युगाब्द 5106), नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, देशबंधु गुप्ता मार्ग, खंड–5, पृष्ठ –34
15. श्रीगुरुजी समग्र, (युगाब्द 5106), नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, देशबंधु गुप्ता मार्ग, खंड–5, पृष्ठ– 34–35
16. श्रीगुरुजी समग्र, (युगाब्द 5106), नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन, देशबंधु गुप्ता मार्ग, खंड–5, पृष्ठ–135
17. सेठ, कैलाश चंद्र,नैमिष राय, मोहन दास (1998), बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर संपूर्ण वांग्मय, दिल्ली : डॉ आंबेडकर प्रतिष्ठान, भारत सरकार, खंड –9, पृष्ठ 18–20
18. स्वातांत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर समग्र (2000), नई दिल्ली : 4/19, आसफ अली रोड, खंड–5, पृष्ठ– 483
19. वहीं, पृष्ठ –484
20. कीर, धनंजय (1990), डॉ आंबेडकर : जीवन एवं दर्शन, मुंबई, पृष्ठ 394– 395
21. शर्मा, डॉ महेश चंद्र (2016), पंडित दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वांगमय, नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 4/19, आसफ अली रोड, खंड –13, पृष्ठ संख्या 1–2
22. शर्मा, डॉ महेश चंद्र (2016), पंडित दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वांगमय, नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 4/19, आसफ अली रोड, खंड–11, पृष्ठ संख्या–111
23. कीर, धनंजय, वहीं, पृष्ठ 122
24. सेठ, कैलाश चंद्र, नैमिष राय, मोहनदास, दास (1998), बाबा साहेब डॉ.आंबेडकर संपूर्ण वांग्मय, दिल्ली : डॉ आंबेडकर प्रतिष्ठान, भारत सरकार, खंड–9, वहीं, पृष्ठ–169
25. तरुण विजय (संपादक), साप्ताहिक पांचजन्य, नई दिल्ली : भारत प्रकाशन लिमिटेड, 26 मार्च, 2006, पतंगे, रमेश, समरसता का चमत्कार, पृष्ठ संख्या 9– 10
26. वहीं, पृ0 10–11